RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666 ISSN: 2230-8938

UGC Journal No: 41391 Impact Factor: 5.527

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual
Peer Reviewed Refereed Research Journal)

✸ Vol 13 ✸ Issue 1 ✸ January-March 2023

EDITOR
Suresh Chandra

SUB-EDITOR
Nilisha Singh
Mamtesh Kumari
Rakhi Panchola
Shikha Mamgain

PUBLISHED BY
Sahitya Kala Vigyan Tatha Sanskriti Anusandhan Samiti
Uttarkashi, Uttarakhand –249193 (INDIA)

EDITOR'S NOTE

With the progress of science in the modern era, research has special importance in our life because research is now being used for the in-depth study of each and every branch of knowledge. Through research efforts are made to answer those fundamental questions whose answers have not yet been available. But the answer to each question depends on the efforts of man. This concept can be clarified with this example, until a few years ago man did not reach the moon, in fact he did not know what the moon actually was? It was a problem that had no solution. Man had only assumptions about the moon, did not have pure knowledge. But with his efforts, he reached the moon, brought the soil from there, and from its analysis, it was possible to know what the moon is? Through research works, an attempt is made to find answers to those questions whose answer is not available in the literature or in the knowledge of man. In fact, the word 'research' is a process in which the activities of 'research' and 'investigation' are also included, in which a reliable solution to a problem is found on the basis of gathering and analyzing many types of facts. According to the nature of the word 'research', the process of enquiry, investigation, intensive inspection, extensive testing, planned study, purposeful and prompt general determination, etc. are important, that is, 'research' is a systematic and well-planned process by which human knowledge is increased. Human tensions are also reduced by research work. It is an effective method of solving scientific problems because research involves scientific investigation of a problem. The action of investigation is indicative of the fact that the problem should be looked at very closely. He should be investigated and his knowledge should be obtained.

As part of this process, the journal Anusandhan Vatika is presented to you as a medium of cognitive dialogue between Scholars, teachers and the academicians. Conceptual and experiential interpretation and analysis have been presented in this issue along with new factual information on multidisciplinary research related questions. Some of the research papers included in the research journal does not appear to be fully following the theoretical criteria of the research methodology. Nevertheless, due to the originality and novelty of the ideas, they have been given a place in the journal so that they can be combined in the integrated curriculum of the journal. Hope this issue of Anusandhan Vatika will be helpful in communication of research stream.

— Editor

TABLE OF CONTENT

Analyzing The Performance of Selected Co-Op Banks In Rajasthan- Mukesh Sankhla 1
वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण और भूमि प्रदूषण निवारण के उपाय- डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरोहित 10
उत्तराखण्ड राज्य के गठन में महिलाओं का योगदान- कल्पना उप्रेती 15
NEP 2020: Visualizing The Teacher Education Of Tomorrow- SUDHAKAR PANDEY; Dr. Vikramjit Singh 17
गीतानुसारं ज्ञानप्राप्तेः उपायः - मानस मण्डलः 22
The Theme of Struggle for survival as reflected in the Novel, The Road by Cormac Mc Carthy-Dr. S. David soundar; W. Nancy kanimozhi 25
वेदेजु अभिवर्णितस्य कृज़िकार्यस्य आधुनिककाले समन्वयनम्– Jayoshee Paul 28
भारत में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वः मुद्दे और चुनौतियाँ-डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा 31
'कतार से कटा घर' कथा संग्रह में सशक्त नारी भूमिका- मोहिनी गुप्ता 37
साहित्य में चेतना का परिदृश्यः आवश्यकता एवं अभिव्यक्ति- डॉ0 प्रियंका 39
Right To Education Act Empowerment of Citizens- Dr. T. S. Shyam Prasad 43
Study of Climate Change Detection Using Big Data Analysis- Poonam Sharma; Pawan Kumar 49
Study of Secured Data Retrieval In Encrypted Cloud Data Environment- Priyanka Verma; Pawan Kumar 55
स्वामी विवेकानन्द और उनका राज़्ट्रवादः एक अधययन- डॉ0 अंकेश कुमार 59
Ancient Indian Metallurgy- Dr. Akarsh Akul 62
संस्ख्रतसाहित्ये काव्यगुणविमर्शः- Prasenjit Malo 68
ब्रिटिश काल में अफीम की खेतीः एक ऐतिहासिक विश्लेषण- अलका कुमारी; डॉ0 माला सिंह 71
Factors responsible for shaping foreign policy of India- Kirti Kumar Pandey 75
Gender equality: A Progress Accelerating Towards Sustainability- Dr. Usha Pathak; Dr. Onima Sharma 79
The Status Of Artisan And Backward Castes (Service Castes) In Agrarian Society In Telangana- Dr. Musugu Srinivasa Rao 85
Indian Monsoon and its implications on Indian economy- Dr Pallavi 92
घरेलू हिंसा महिला जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप (घरेलू हिंसा कारण और निवारण)- डॉ0 अलका सक्सेना 98
मूक बधिर विशिष्ट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अधययन- डॉ0 भावना सिंह 102
लघु उद्योग और भारत का ग्रामीण विकास- विक्रांत मोहन; डॉ0 रमन दीप सिंह 109
Career Choices in Metro and Non- Metro Cities: An Overview- Dr. Jyotima Pandey 115
चित्र मुद्गल के उपन्यासों में नारी संघर्ष- पिन्टू यादव 119
भारतीय सांस्कृतिक चेतना के संवर्धन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका- डॉ0 समीर कुमार पाण्डेय 122
हिंदी विभाग, शोध छात्र, एम. एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, गुजरात- अमित कुमार गुप्ता 126
स्वतंत्रता पूर्व भारत में दलित राजनीतिः समीक्षात्मक अधययन- बृजेश कुमार रजक 129
बौद्ध धर्म और विज्ञान- डॉ0 ममता कुमारी 132
डॉ0 जगन्नाथ मिश्र का आर्थिक चिंतन एवं कार्य एक समीक्षात्मक अध्ययन- नीतू कुमारी; प्रो0 उषा झा 136
वैदिक वाड्मय में पर्यावरणीय महत्व- डॉ0 नरेन्द्र कुमार 142
आचार्यमनुयाज्ञवल्क्ययोर्विवरणदिशा उपनयनसंस्कारः- एकम् अधययनम्– Dr. Pritam Rooj 144
Social Policy of the British Government in Modern India (with special reference to female infanticide)- Dr. Ravi Prakash 149
शान्ति शिक्षा की प्रासंगिता एवं इसके बाधाक तत्व- डॉ0 राकेश कुमार सिंह 154
विश्व भाषा हिन्दी- डॅ0 मन्नु कुमार शर्मा 161
शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान- एक अधययन- डॉ0 अनिल कुमार 163

Women In Development: Post Independent India- Archana Pal; Onima Sharma 166
कोविड 19 महामारी: आत्महत्या दर एवम सामाजिक एवं मानसिक प्रभाव- कौमुदी राय 174
Code on Social Security 2020 with Regars to Unorganised Workers: A Critical Study- Priyanka Chaturvedi; Dr. Pooja Gupta 179
भारत में कला और धर्म का सृजन- राम्या ऐरी 183
महामना पं0 मदन मोहन मालवीय की शिक्षा एवं जीवन-दर्शन- डॉ0 अनिल कुमार पाण्डेय 192
भारत में महिला शिक्षा का इतिहास- शशिकला यादव; डॉ0 हलधार यादव 196
जनजातीय महिलाओं के उत्थान में महिला आंदोलन की भूमिका (1947-2010)- डॉ0 रेणूका पाठक 200
समकालीन हिन्दी आदिवासी कविता में अस्मितामूलक विमर्श- डॉ0 प्रकाश कृष्णदेव धुमाल 203
औपनिवेशिक बिहार में उच्च शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन- रश्मि कुमारी; प्रो0 अंजली प्रसाद 209

RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666 ISSN: 2230-8938

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal)

Vol 13 **Issue 1** **January-March 2023**

विश्व भाषा हिन्दी

डॉ0 मन्नु कुमार शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, संत जेवियर कॉलेज, महुआडांड, झारखंड

भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की सच्ची संवाहिका के रूप में उभर कर सामने आई है। हिंदी न केवल भारत की राष्ट्रभाषा है, अपितु आज वह अंतरराष्ट्रीय भाषा का गौरव प्राप्त करने के द्वार पर दस्तक दे रही है। आज हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में अग्रणी बन गई है। हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं, अपितु संपूर्ण भारतवर्ष को जोड़ने वाली कड़ी भी है। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा सर्वसम्मति से हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया और सन् 1950 में संविधान के लागू होने के बाद हिंदी को राजभाषा का दर्जा पूर्णतः प्राप्त हो गया। भारत विविधताओं वाला देश है, जहां कई भाषाएं और बोलियां विद्यमान हैं। इतनी विविधता वाले देश में यह मतभेद होना सामान्य है कि आखिर हिंदी को ही राजभाषा होने का दर्जा क्यों दिया जाए ? इसका सीधा जवाब यही है कि आज भी भारत में हिंदी के अलावा कोई ऐसी भाषा नहीं है जो देश की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जा सके। अकारण नहीं कि हिंदी ही वह भाषा है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रख सकती है।

केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में हिंदी बोली और समझी जाती है। मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, मायनमार, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, वियतनाम, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हॉन्गकोंग, त्रिनिदाद, गयाना, इंग्लैंड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विश्व के कई देशों में हिंदी भाषियों या हिंदी समझने वालों का बाहुल्य है। यहां तक कि विदेशों में स्थित कई विश्वविद्यालयों व संस्थाओं में हिंदी का पठन–पाठन भी किया जा रहा है। इस पैमाने पर देखा जाए तो हिंदी न केवल भारत की राष्ट्रभाषा बनने का अधिकार रखती है, बल्कि आज वह विश्व भाषा बनने की भी अधिकारिणी है। क्योंकि विश्व भाषा से अपेक्षाएं होती हैं कि उसे बोलने–समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो, जो एक लचीली भाषा हो, जिसमें भिन्न संदर्भों की अभिव्यक्ति की क्षमता हो, जिसका एक सर्वस्वीकृत मानक रूप हो, जो कि हिंदी में है। साथ ही, यह भी उल्लेखनीय है कि हिंदी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई मतभेद नहीं है। अनेक भाषाओं के शब्द आत्मसात् कर हिंदी अपने आयाम को निरंतर विकसित करती रही है। यही कारण है कि आज हिंदी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश माना जाता है। हिंदी भाषा में आपको आर्य, द्रविड़, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, फ़ारसी, चीनी, जापानी, रूसी जैसी कई भाषाओं के शब्द आसानी से मिलते हैं, जो हिंदी भाषा की वसुधैव कुटुंबकम वाली प्रवृत्ति को उजागर करती है। इसीलिए कहा जा सकता है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा का दर्जा प्रदान करने की भारत की मांग सर्वथा उचित है और इस दिशा में हम सबको एकजुट होकर प्रयास करने की आवश्यकता है ।

संचार साधनों की बदौलत विश्व के बीच की दूरियां खत्म सी हो गई हैं। आज संपूर्ण विश्व ही एक गांव बन गया है, जहाँ कभी भी, कहीं से भी और किसी से भी तत्काल संपर्क स्थापित किया जा सकता है, बशर्ते आपके पास उसके लिए अपेक्षित साधन उपलब्ध हैं। वैश्वीकरण और बाजारवाद के इस युग में भारत एक ऐसा बाजार है जिस पर सारे संसार की नजर है। व्यापार करने के लिए संप्रेषण की आवश्यकता होती है, जिसके लिए अक्सर कंपनियां स्थानीय भाषा को सर्वोपरि रखती हैं। उपभोक्ताओं तक अपने वस्तुओं को पहुंचाने और उसके प्रचार के लिए अधिकतर हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना माल बेचने के लिए हिंदी तथा अन्य स्थानीय भाषाओं को अपना रही हैं। यही कारण है कि गूगल माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां हिंदी के प्रौद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। भाषा का विकास आज के युग में इस बात पर पूर्णतः निर्भर करता है कि वह सूचना संचार और प्रौद्योगिकी के इस युग के साथ किस हद तक कदम से कदम मिलाकर चलने योग्य है। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने हिंदी को भी नए पंख दिए हैं, जिससे आज वह ऊंची उड़ान भर रही है। इंटरनेट पर भी हिंदी की स्वीकार्यता और लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से विश्व भर में प्रसारित होने लगा है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी अब पहले की तुलना में अपना दायरा बढ़ा रही है। हिंदी ब्लॉग और व्लॉग आज पहले की तुलना में बड़ी मात्रा में किए जा रहे हैं। युवाओं में भी हिंदी में अपनी बात सामने रखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह हिंदी के प्रति आज के युवा वर्ग का क्रेज नहीं तो और क्या है? भारत के सूचना–संचार माध्यमों जैसे आकाशवाणी, दूरदर्शन, विभिन्न निजी टीवी चौनलों आदि ने हिंदी के कार्यक्रमों के प्रसारण द्वारा हिंदी को विश्व के कोने–कोने में पहुंचाने का काम किया है। हिंदी सिनेमा ने भी हिंदी भाषा को भारत के साथ–साथ विश्व के अन्य कई देशों में पहुंचाया है ।

सरकार एवं निजी संस्थाओं के प्रयासों से आज शब्द–संसाधन, डेस्कटॉप पब्लिशिंग, ई–मेल, भाषा अध्ययन, लिप्यंतरण, मशीनी अनुवाद इंटरफेस और इंटरनेट सक्षम जैसी सुविधाएं अब भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध हो रही हैं। यद्यपि इंटरनेट पर हिंदी की उपस्थिति दर्ज होने में काफी समय लगा है, किंतु मानक की–बोर्ड की समस्या कुंजीपटल के फोनेटिक उपयोग ने एक सीमा तक हल कर दी है। रही–सही समस्या का समाधान हिंदी के यूनिकोड के आ जाने से हो गया है। आज हम माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल, जैसे सॉफ्टवेयर, के प्रयोग द्वारा फोनेटिक्स कीबोर्ड का प्रयोग करते हुए बहुत ही आसानी से हिंदी में टाइपिंग कर सकते हैं। इसके अलावा कंप्यूटरों पर इन्बिल्ट इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड को सीख कर भी हम बड़ी आसानी से हिंदी टाइपिंग कर सकते हैं। इनस्क्रिप्ट की–बोर्ड के लिए तो किसी प्रकार के सॉफ्टवेयर की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है, केवल कंप्यूटर की सेटिंग में जाकर भाषा विकल्प में हिंदी को सक्रिय करना होता है। इनस्क्रिप्ट की–बोर्ड लेआउट बड़ी आसानी से गूगल कर प्राप्त किया जा सकता है और थोड़े प्रयास से इनस्क्रिप्ट हिंदी टाइपिंग सीखी जा सकती है। यही नहीं आज ऐसे कई माध्यम उपलब्ध हैं जिनके प्रयोग द्वारा बोलकर भी हिंदी टाइपिंग की जा सकती है, उदाहरण के लिए गूगल डॉक्स के टूल्स मेनू का प्रयोग कर आसानी से हिंदी में बोलकर टाइपिंग की जा सकती है। हम पाते हैं कि आज पहले की तुलना में कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत ही सहज हो गया है।

हिंदी का केवल प्रयोग ही नहीं बढ़ा है, बल्कि हिंदी नए–नए क्षेत्रों में उभर रही है, जिससे हिंदी में रोजगार की विपुल संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं। हिंदी पढ़कर विभिन्न सरकारी नौकरियों, जैसे अनुवादक, प्राध्यापक, राजभाषा अधिकारी, शिक्षक, की नियुक्ति प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा हिंदी में विज्ञापन लेखन, प्रूफ रिडिंग, अनुवाद, पुस्तक–लेखन, सबटाइटल लेखन, डबिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में नवीन संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी और एनिमल प्लानेट जैसे विभिन्न चौनलों के हिंदी प्रसारण ने यह साबित कर दिया है कि हिंदी में भी गंभीर आर्थिक और वैज्ञानिक चिंतन संभव है। आज आर्थिक, तकनीकी, कानूनी और वैज्ञानिक विश्लेषण लेखन के लिए हिंदी विषयों की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है और इन नए क्षेत्रों ने रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए हैं। इनमें समाचार लेखन सूचना प्रसारण खेल तथा मनोरंजन के चौनल भी शामिल हैं। हिंदी में डब की जा रही अंग्रेजी फिल्में भी इसी भावना को पुष्ट करती हैं। कार्टून नेटवर्क, डिज्नी एवं पोगो आदि भी घंटों हिंदी में प्रसारण करने लगे हैं। धार्मिक चौनल जैसे आस्था, संस्कार, साधना आदि तो पहले से ही 24 घंटे हिंदी में प्रसारण कर रहे हैं। बाकी क्षेत्रों में इसे आरंभ करने के प्रयास जारी हैं क्योंकि ज्यादातर लोगों से इसी भाषा में जुड़ पाना संभव है। कार्यक्रम प्रस्तोताओं को हिंदी सिखाने वालों तथा हिंदी कॉपीराइटर की मांग में भी जबरदस्त उछाल आया है। यहां तक कि बड़ी–बड़ी कंपनियों के पदाधिकारियों को, सरकारी अधिकारियों को टीवी कैमरों के सामने हिंदी में सही रूप से इंटरव्यू देने के लिए सही हिंदी उच्चारण सिखाने वालों की मांग भी काफी बड़ी है। स्पष्ट है कि आने वाले समय में इन क्षेत्रों में हिंदी प्रशिक्षकों का वर्चस्व बना रहेगा। या भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की बढ़ती हुई भूमिका का नहीं है तो और क्या है?

आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के साथ–साथ इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के लिए कुछ ठोस पहल किए जाएं। हिंदी में यह शक्ति कब आएगी कि वह विश्व के लिए एक ऐसी महत्वपूर्ण भाषा बन जाए, जिसकी उपेक्षा चाह कर भी ना की जा सके। यह तभी होगा जब हमारी मानसिकता में बदलाव आएगा। जब हम अपनी भाषा बोलते हुए गौरव का अनुभव करने लगेंगे। क्योंकि जापान, जर्मनी, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, स्पेन, इटली आदि सभी विकसित देश अपनी भाषा में काम करके ही शक्तिशाली बने हैं। वह अपनी भाषा में ही अपना मंतव्य प्रस्तुत करते हैं, जो कि अनुवादकों के माध्यम से विश्व के समक्ष पहुंचती है। हमें हिंदी को लेकर भी ऐसे प्रयास करने की आवश्यकता है। इस दिशा में हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी काफी प्रयास कर रहे हैं, जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ में या अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनके द्वारा हिंदी में दिए जा रहे भाषणों से प्रतिबिंबित होता है। अंततः यही कहा जा सकता है कि हमें अपनी भाषा को उतना सशक्त बनाना होगा कि हम अपनी बात हिंदी में ही विश्व के सामने रखें और विश्व हमारी बात समझने के लिए हिंदी भाषा सीखे। ऐसा होने पर ही हिंदी को विश्व भाषा होने का वास्तविक दर्जा प्राप्त हो सकेगा।